भजन

तर्ज–महबूब मेरे महबूब

धनी धाम मेरे धनी धाम, अर्श की खिलवत तेरी वाणी में
मैं समझ गयी हूं मेरे पिया, क्या राज छिपा इस वाणी में

1–श्री राज तुम्हारे इश्क से ही, कायम वो अपनी हस्ती है
जो खुद ही छलकती आंखों से, तेरे इश्क की वो ही मस्ती है
हम डूब गये है पिया, तेरी लबरेज छलकती वाणी मे

2–क्या खूब नजारा तेरा पिया, अर्श के कण कण में है भरा
अलमस्त सभी वहां रहते है, पल पल है बरसता इश्क तेरा
न इक पल की वहां दूरी है, सब रहते है तेरी निगाहों में

3–हर चीज महकती है जहां, गुण ऐसा तेरे नूर मे है
बिन कहे रूहें सुख लेती है, जो रहती तेरे हजूर में है
हम ही तो है कामिल, पिया तेरी उन पाक अदाओं के